श्रीमद्भागवत में भक्ति तत्व "नवधा भक्ति" भक्ति : स्वरूप

किरन त्रिपाठी

वेदों में भक्ति के स्वरूप उपासना के अर्थ में मिलते हैं। मानव कल्याण के लिए प्रकृति के रूप में अग्नि, सूर्य, वायु, वरूण, पृथ्वी आदि की स्तुति की जाती थी। क्रमशः वह श्रद्धा परिवर्तित होकर उपासना भक्ति के रूप में विकसित हुई। इस तरह वेदों से ही भक्ति का प्रारम्भ माना जाता है। ऋग्वेद में अग्नि की उपासना अभिवादनशील होकर की जाती थी, क्योंकि ईश्वर के सन्निकट बैठकर ही भक्त अपने इष्टदेव का कृपापात्र बन सकता है।

आत्मिकभाव से निवेदन करना ही भक्ति है। अग्नि की उपासना प्रतिदिन प्रातः सायं नमन करके की जाती है। इस तरह वेदों में वर्णित प्रकृति की स्तुति–प्रार्थना करना ही भक्ति है। ब्रम्हसूत्र में अनुभव को ही भक्ति कहते हैं। ब्रम्हज्ञान का अन्त अनुभव में होता है, अनुभव एक यथार्थ विषयवस्तु है एवं यह कल्पनाहीन है। अनुभव ईश्वर के प्रति श्रद्धा से उत्पन्न होती है। यह श्रद्धा ही भक्ति है। श्रद्धा का पराभक्ति रूप में श्वेताश्वर उपनिषद में उल्लेख है कि महात्मा उन सब विषयों को एकमात्र ईश्वर के निकट ही व्यक्त करते हैं, जिसमें पराभक्ति हो, देवता एवं गुरू के प्रति पराभक्ति ही ज्ञान प्राप्ति का एक मात्र उपाय है।